

विकास और जलवायु के बीच सन्तुलन जरूरी - राज्यपाल

लखनऊ: 09 सितम्बर, 2014

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल, श्री राम नाईक ने आज लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय हाल में जियोलॉजी विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी 'क्लाइमेट चेन्ज एण्ड एन्वायरन्मेंटल सस्टेनेबिलिटी: रिकार्ड फ्रॉम पोल्स टू टॉपिक' का उद्घाटन किया। संगोष्ठी में डा० हरवंश सिंह, महानिदेशक जियोलॉजिकल सर्वे आफ इण्डिया, डा०एस०बी० निम्से, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय सहित अनेक वरिष्ठ वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, अध्यापक व छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

राज्यपाल ने उद्घाटन सत्र में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि 21वीं सदी जलवायु परिवर्तन जैसी प्रमुख पर्यावरणीय चुनौती का सामना कर रही है। ऐसे में संगोष्ठी का विषय बहुत सामयिक है। संगोष्ठी से निकले निष्कर्ष निश्चित रूप से हमारे नीति-निर्धारकों, वैज्ञानिकों एवं आम जनता के लिये लाभदायक होंगे। जलवायु परिवर्तन का मुद्दा आम आदमी से जुड़ा है। जलवायु परिवर्तन का प्रत्येक देश पर व्यापक आर्थिक और सामाजिक असर पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन सहित विकास की चुनौती से निपटने के लिये अकादमिक संस्थाएं एवं सरकारें विकास और जलवायु के बीच संतुलित नीति बनाये। उन्होंने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा एवं प्राकृतिक संसाधन के उपयोग के प्रति जागरूकता को और गतिमान बनाने की जरूरत है।

श्री नाईक ने कहा कि पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति हमारे अथर्वेद में भी कहा गया है कि निर्मल धरती को बिना नुकसान पहुंचाये उसको उपयोग में लायें। प्राकृतिक संसाधन का दोहन आवश्यकता के अनुरूप होना चाहिये। प्राकृतिक संसाधन के संतुलित उपयोग और संवर्धन से पर्यावरण का संरक्षण और सुरक्षा हो सकती है। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन के लिये संतुलित निष्कर्ष निकालना वास्तव में हमारे विद्वानों के लिये एक चुनौती है।

राज्यपाल ने कहा कि लखनऊ विश्वविद्यालय में वे पहली बार आये हैं। पूर्व में सभी विश्वविद्यालयों को प्रवेश, परीक्षाफल, दीक्षान्त समारोह व अन्य समस्याओं के संबंध में पत्राचार कर चुके हैं। शिक्षा के स्तर में सुधार लाने की जरूरत है। उन्होंने यह भी कहा कि महामहिम के शब्द को सम्बोधन में लाने के बजाय माननीय या आदरणीय जैसे शब्दों का प्रयोग करना चाहिये।

डा० हरवंश सिंह, महानिदेशक, जियोलॉजिकल सर्वे आफ इण्डिया ने कहा कि जलवायु परिवर्तन एक सामयिक विषय है। हमारे वैज्ञानिकों को इस दिशा में तय करना होगा कि इस मुद्दे पर क्या होना चाहिये। उन्होंने कहा कि यह एक सामाजिक मुद्दा है जिससे हर व्यक्ति का जुड़ाव जरूरी है। उन्होंने कहा कि प्रकृति को नुकसान होने से वास्तव में मानव जाति का नुकसान होता है। उन्होंने कहा कि पहाड़ों पर बर्फ का तेजी से पिघलना चिन्ता का विषय है।

कुलपति, डा० एस०बी० निम्से ने अपने विचार रखते हुए का कि संगोष्ठी के निष्कर्ष लाभदायक होंगे। उन्होंने विभाग के इतिहास और उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला। राज्यपाल ने इस अवसर पर एक पत्रिका का भी लोकार्पण किया।
